उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर

पत्र – गढ़वाली व्याकरण

(कोड: AEC – 1)

क्रेडिट:02 पूर्णांक: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:-

इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने का उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- छात्रों को गढ़वाली के व्याकरण का ज्ञान उपलब्ध करवाने के लिए।
- गढ़वाली के मानकीकरण संबंधित जानकारी के लिए।
- गढ़वाली वाक्य निर्माण के समुचित अध्ययन के लिए।

इकाई	पाठ्य विषयक/विवरण/ पाठ्यक्रम साम्रगी
1	• गढ़वाली का व्याकरणिक स्वरूप: वर्णमाला, उच्चारण वर्तनी • स्वर ध्वनियाँ: गढ़वाली की स्वर ध्वनियाँ, अनुनासिक और अनुस्वार, स्वर संयोग, अर्धस्वर, स्वरों की उत्पत्ति, स्वर परिवर्तन के रूप। गढ़वाली की व्यंजन ध्वनियाँ: उत्पत्ति, परिवर्तन के रूप एवं विपर्यय, गढ़वाली का विकास
2.	• गढ़वाली का शब्दकोश: तत्सम, तद्भव, विदेशी, पर्यायवाची, विलोम, समानार्थी, अनेकार्थी शब्द। • गढ़वाली का भाषिक स्वरूपः शब्द रचना (उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संधि) •गढ़वाली वाक्य, परिभाषा, भेद एवं प्रकार • शब्द विचार: शब्द और पद, गढ़वाली शब्दों की रूप रचना

प्रयोगपाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:–

- व्याकरण संबंधित नियमों का ज्ञान होगा।
- गढ़वाली व्याकरण की बारीकियों को समझेंगे। गढ़वाली शब्दों का प्रयोग करेंगे।
- वाक्य विश्लेषण तथा गढ़वाली शब्दों का संश्लेषण कर सकेंगे।

संदर्भ सूचीः .

1. गढ़वाली भाषा : भाषाशास्त्रीय और व्याकरणिक अध्ययन – डॉ. गोविन्द चातक
2. गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य – डॉ. हरिदत्त भट्ट "शैलेश"
3. गढ़वाली व्याकरण की रूपरेखा – अबोध बंधु बहुगुणा
4. गढ़वाली व्याकरण – भुवनेश्वर जुयाल तथा वाचस्पति डोभाल

अध्यक्ष
भाषा एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान विभाग
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
बहादराबाद, हरिद्वार-249402

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर

पत्र – गढ़वाली का इतिहास और साहित्य (कोड: AEC – 2)

क्रेडिट: 02 पूर्णांक: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:-

- इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने का उद्देश्य निम्नलिखित है:-
- गढ़वाली की शब्द सीमाओं को समझने के लिए।
- गढ़वाली साहित्य का इतिहास और काल विभाजन के संदर्भ में।

इकाई	पाठ्य विषयक / विवरण
1	• गढ़वाली का क्षेत्र: गढ़वाली शब्द की व्युत्पत्ति, विभिन्न मत • गढ़वाली की पृष्ठभूमि: ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, सामाजिक पृष्ठभूमि एवं गढ़वाली भाषा क्षेत्र • गढ़वाली की विभिन्न बोलियाँ: गढ़वाली बोलियों का सामान्य परिचय, भाषिक विशेषताएँ
इकाई 2	• गढ़वाली का उद्भव एवं विकास • गढ़वाली साहित्य का इतिहास और काल विभाजन, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशिष्ट रचनाकार • गढ़वाली सृजनात्मक साहित्य

पाठ्य अधिगम परिणाम:–

1. गढ़वाली के इतिहास का ज्ञान होगा।
2. गढ़वाली साहित्य के इतिहास को समझेंगे।
3. गढ़वाली साहित्य और बोलियों को उदाहरण के रूप में प्रयोग करेंगे।
4. गढ़वाली साहित्य का विश्लेषण एवं संश्लेषण कर पाएँगे।
5. गढ़वाली के इतिहास और साहित्य का मूल्यांकन करेंगे।

संदर्भ सूची: -

1. गढवाल का इतिहास – पं. हरिकृष्ण रतूड़ी
2. गढ़वाली भाषा और उसका लोक साहित्य – डॉ. जनार्दन काला
3. गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन – मोहन बाबुलकर
4. गढ़वाली गद्य परंपरा – अनिल डबराल
5. लोक साहित्य के प्रतिमान – कुंदनलाल उप्रेती
6. उत्तराखण्ड का इतिहास – शिव प्रसाद डबराल
7. Garhwal : Ancient and Modern – Dr. Pati Ram

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री द्वितीय वर्ष, तृतीय सेमेस्टर

पत्र – अनुवाद – गढ़वाली अनुवाद लेखन का अभ्यास (AEC – 3)

पूर्णांक: 100

क्रेडिट: 02

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:-

इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- अनुवाद प्रक्रिया के ध्यान देने योग्य तत्वों को समझना।
- गढ़वाली में अनुवाद का अभ्यास कराना।
- अनुवाद कार्य करते समय आने वाली समस्याएँ।

इकाई	पाठ्य विषयम/विवरण/
1	• अनुवाद: अर्थ एवं परिभाषा • अनुवाद का स्वरूप: अनुवाद कला, विज्ञान अथवा शिल्प • अनुवाद की प्रकृति, उपयोगिता एवं आवश्यकता • गढ़वाली में अनुवाद परंपरा
2	• अनुवाद की प्रक्रिया, प्रकार व समस्याएँ • अनुवादक के गुण • गढ़वाली का व्यावहारिक अनुवाद • अनुवाद की इकाई: शब्द, पदबंध, पाठ

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:-

1. अनुवाद का अर्थ, स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान होगा।
2. अनुवाद की प्रकृति, उपयोगिता एवं आवश्यकता को समझेंगे।
3. गढ़वाली में अनुवाद को दैनिक व्यवहार में प्रयोग करेंगे।
4. गढ़वाली में व्यावहारिक अनुवाद का मूल्यांकन कर पाएँगे।

संदर्भ सूची :–

1. अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद और अनुप्रयोग – प्रो. दिनेश चमोला "शैलेश"
3. अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रविधि – भोलानाथ तिवारी
4. अनुवाद समस्याएँ एवं समाधान – प्रो. अर्जुन चव्हाण
5. व्यावहारिक राजभाषा कोश – प्रो. दिनेश चमोला "शैलेश"
6. गढ़वाली हिंदी शब्द कोश – सं. रमाकांत बेंजवाल

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री द्वितीय वर्ष, चतुर्थ सेमेस्टर

पत्र – गढ़वाली लोक साहित्य (कोड: AEC – 4)

क्रेडिट: 02 **पूर्णांक: 100**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :–

इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- लोक साहित्य के विस्तृत अध्ययन के लिए।
- गढ़वाल क्षेत्र में प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों के गहन अध्ययन के लिए।
- गढ़वाली लोक साहित्य के विकास का इतिहास और उसकी विधाओं को समझने के लिए।

इकाई	**पाठ्य विषयक/विवरण/**
1	• लोक साहित्य: अर्थ और स्वरूप, गढ़वाली लोक साहित्य का उद्भव और विकास • गढ़वाली लोक साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ • गढ़वाली लोक साहित्य का वर्गीकरण: गढ़वाली लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ, लोक संगीत और लोक नृत्य
2	• गढ़वाली की विविध विधाओं का सामान्य परिचय • गढ़वाली लोक गीत • गढ़वाली लोक कथा • गढ़वाली लोक गाथा • गढ़वाली लोक साहित्य का स्वरूप एवं संभावनाएँ

पाठ्य अधिगम परिणाम :–

1. गढ़वाली लोक साहित्य का ज्ञान होगा।
2. लोक साहित्य का अर्थ, स्वरूप और प्रवृत्ति समझेंगे।
3. लोक साहित्य का विश्लेषण, संश्लेषण कर पाएँगे।
4. गढ़वाली लोक साहित्य का स्वरूप एवं संभावनाओं का मूल्यांकन करेंगे।

संदर्भ सूची: -

1. उत्तराखंड का लोक साहित्य – उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (UOU)
2. गढ़वाली भाषा और उसका लोक साहित्य – डॉ. हरिदत्त भट्ट "शैलेश"
3. उत्तराखंड की लोक भाषाएँ (गढ़वाली, कुमाऊँनी, जौनसारी) – डॉ. अचलानंद जखमोला
4. गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन – मोहनलाल बाबुलकर
5. गढ़वाली भाषा और उसका लोक साहित्य – डा0 जनार्दन काला